Programme Outcomes of M.A. Hindi

हिन्दी भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ–साथ हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा भी है। संविधान में भी हिन्दी को राजभाषा कसा दर्जा तथा आठवीं अनुसूचि में शामिल किया गया है। अतः हिन्दी भाषा को समझना आवश्यक है। हिन्दी साहित्य में एम.ए. हिन्दी एक स्नातकोत्तर स्तरीय कार्यक्रम है जो हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास, उसके विभिन्न रूप तथा विधाओं के क्षेत्रों में उन्नत ज्ञान और रचनात्मक कौशल प्रदान करने पर केन्द्रित है। स्नातकोत्तर हिन्दी कार्यक्रम का प्रयोजन विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा में रचित साहित्य में एक व्यापक शिक्षा प्रदान करना है जिसमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, आलोचना, पत्रकारिता, रंगमंच इत्यादि के क्षेत्रों में उन्नत ज्ञान व कौशल के विकास पर ध्यान केन्द्रित है। इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने पर विद्यार्थियों को ज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों की गूढ़ समझ विकसित होगी :

- छात्र को हिन्दी भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत की गहन जानकारी प्राप्त होती है।
- अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों (मौखिक व लिखित) में प्रभावी संचार को आत्मसात् करना।
- हिन्दी भाषा और साहित्य के विभिन्न सिद्धान्तों का उन्नत ज्ञान प्रदान करना तथा छात्रों को प्रतिदिन शैक्षणिक संस्थाओं में उच्च डिग्री या शोध कार्य हेतु सशक्त बनाना।
- छात्रों को मौलिक सोच, विचार एवं निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
- छात्र लेख लिखने या सजृन कार्य में निपुणता के साथ–साथ भाषण कला और हिन्दी भाषा में महारत हासिल करने में सक्षम बनता है।
- छात्र को हिन्दी भाषा में साहित्यिक विविधता के प्रति समझ तथा भाषा के विभिन्न रूपों व शैलियों की समझ विकसित होती है।
- छात्र को हिन्दी साहित्य के माध्यम से समाज, संस्कृति और इतिहास के प्रति गहरी समझ प्राप्त होती है परिणामतः सोचने की क्षमता में अभिवृद्धि होती है।
- छात्र प्राचीन भाषा में से हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, देवनागरी लिपि के वैज्ञानिक आधार, भाषा विज्ञान और प्राचीन , मध्यकालीन काव्य के साथ–साथ गद्य की विभिन्न विधाओं का विस्तृत ज्ञान प्रापत कर सकने में सक्षम बनता है।

Course Outcomes of M.A. Hindi

आधुनिक हिन्दी कविता –

- आधुनिक कविता की प्रमुख प्रवृतियों व परम्परा का ज्ञान कराना।
- हिन्दी नवजागरण, भारतेन्दु युगीन कवि व कविताओं का सविस्तृत परिचय प्रदान करना।
- राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवियों की काव्यगत विशेषताओं का परिचय।
- छायावादी कविता का अंतरंग परिचय, छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ कवियों की रचनाओं की जानकारी के साथ दक्षता प्रदान करना।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित कवि – भारतेन्दु हरिशचन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा की प्रमुख कविताओं का अंतरंग परिचय प्रदान करना।

हिन्दी साहित्य का इतिहास –

- हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन और नामकरण के संबंध में जानकारी प्राप्त हुई।
- साहित्यिक प्रवृतियों का ज्ञान प्राप्त हुआ।
- छात्रों को हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त हुआ।
- छात्र आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल व आधुनिक काल के प्रतिनिधि कवियों से परिचित हुए।

PRINCIPAL
Mahila Mahavidyalaya
Jhojhu Kalan (Ch. Dadri)

Scanned with OKEN Scanner

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा :–

- छात्रों को भाषा विज्ञान के स्वरूप, अंग एवं शाखाओं का ज्ञान प्राप्त हुआ।
- भारतीय आर्य भाषाओं के विकास क्रम की जानकारी प्राप्त हुई।
- भाषा प्रयोग के संबंध में समुचित ज्ञान प्राप्त हुआ।
- हिन्दी शब्द सम्पदा एवं विभिन्न भाषाओं से आगत शब्दों से परिचय हुआ।
- वर्ण–विन्यास (व्याकरणपरक) जानकारी प्राप्त हुई।
- भाषा विज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन एवं विभिन्न बोलियों का परिचय प्राप्त हुआ।
- लिपि के स्वरूप, उत्पत्ति, विकास तथा इतिहास से परिचित हुए।
- भाषा के स्वरूप, परिभाषा, विशेषताओं एवं राजभाषा हिन्दी के संवैधानिक स्वरूप का ज्ञान प्रापत हुआ।

विशिष्ट रचनाकार प्रेमचन्द :–

- प्रेमचन्द की युगीन परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त हुआ।
- प्रेमचन्द की पूर्ववर्ती कथा परम्परा से परिचय कराना।
- प्रेमचन्द की कृतियों के जरिए प्रेमचन्द के योगदान को रेखांकित करना।
- प्रेमचन्द की चुनिंदा रचनाओं के माध्यम से प्रेमचन्द को समग्रता में समझ सकना।
- प्रेमचन्द के समकालीन और परवर्ती रचनाकारों – आलोचकों की दृष्टि से प्रेमचन्द का पुनर्मुल्यांकन कर सकने में सक्षम बनाना।

हिन्दी कहानी :–

- प्रारम्भिक हिन्दी कहानी की स्थिति समझ सकेंगे।
- हिन्दी कहानी के विकासक्रम का ज्ञान होना।
- कहानी कला में आए बदलावों को जान सकेंगे।
- कहानी के वर्तमान परिदृश्य की समझ विकसित होगी।
- कथा साहित्य का विश्लेषणात्मक ज्ञान, विभिन्न लेखकों और उनकी रचनाओं का विशिष्ट ज्ञान।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रमुख कहानी व कहानीकारों की विविध विशिष्टताओं का परिचय प्राप्त हुआ।

आदिकालीन और मध्यकालीन कविता :–

- छात्रों को आदिकाल एवं मध्यकालीन काव्य–कृत्तियों तथा आदिकाल, भक्तिकाल के साहित्य की प्रवृतियों की जानकारी प्राप्त हुई।
- काव्य के प्रति समीक्षात्मक प्राचीन तथा मध्य युग की भाषा का ज्ञान हुआ।
- प्राचीन तथा मध्य युग की काव्य परम्परा, गद्य की प्रमुख विधाओं के स्वरूप का परिचय प्राप्त हुआ।
- काव्य के प्रति समीक्षात्मक दृष्टि विकसित हुई।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र :–

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र की समझ, भाषा, कला की आवश्यकता और जीवन के बीच आलोचनात्मक संबंध का निर्माण करती है। पाश्चात्य चिंतन परम्परा की समझ विकसित होगी।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र का साहित्य में महत्व और उपादेयता पर विचार करना।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के साम्य–वैषम्य और उनके कारणों पर विचार करना।
- नई समीक्षा के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त हुआ।

PRINCIPAL
Mahila Mahavidyalaya
Jhojhu Kalan (Ch. Dadri)

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय काव्यशास्त्र :–

- छात्राओं में भारतीय काव्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र, मौलिक चिंतन की क्षमता विकसित हुई।
- छात्राओं को साहित्यशास्त्र के सिद्धान्त एवं समीक्षात्मक ज्ञान प्राप्त हुआ।
- साहित्य एवं काव्यशास्त्र के सहसंबंधों का ज्ञान प्राप्त हुआ।
- काव्यशास्त्र के स्वरूप, काव्य प्रयोजन, काव्य के तत्व, शब्द शक्तियों का ज्ञान प्राप्त हुआ।
- संस्कृत काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों की शास्त्रीय जानकारी प्राप्त हुई।
- भारतीय काव्यशास्त्र की जानकारी अतीत व वर्तमान की कृतियों के बीच आलोचनात्मक संबंध निर्माण करती है। भारतीय चिंतन परम्परा की समझ विकसित होगी।

हिन्दी नाटक एवं रंगमंच :–

- नाटक व रंगमंच के इतिहास से परिचित कराना।
- नाटक व रंगमंच की सैद्धान्तिक अवधारणा को समझाना।
- प्रमुख नाटकों एवं नाटककारों की विशिष्टताओं के माध्यम से नाटक और समाज के अन्तर्सम्बन्धों को समझाना।
- नाटकों के माध्यम से समाज के बदलते परिदृश्य मूल्यों तथा विकास की परम्परा का ज्ञान कराना।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रमुख नाटकों यथा भरतेन्दु हरिशचन्द्र के नाटकों में राष्ट्रीयता , जयशंकर प्रसाद के नाटकों में सांस्कृतिक चेतना, धर्मवीर भारती के नोटकों 'नाट्य शिल्प और अस्तित्ववाद', मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिकता बोध एवं प्रयोगधर्मिता, लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में चित्रित समस्याएँ, असगर वजाहत के नाटकों में विभाजन एवं त्रासदी इत्यादी के प्रति समझ विकसित होगी।

हिन्दी उपन्यास :–

- उपन्यास की सैद्धान्तिक अवधारणा को समझना।
- हिन्दी उपन्यास की विकास परम्परा का ज्ञान कराना।
- हिन्दी उपन्यास की विधि प्रवृतियों के माध्यम से उपन्यास की विकास यात्रा को जानना।
- उपन्यास के उद्भव को सम्भव बनाने वाली परिस्थितियों को बताना।
- प्रमुख उपन्यासों एवं उपन्यासकारों की विशिष्टताओं के जरिए उपन्यास और समाज के अन्तर्संबंध को समझाना।
- छात्रों में उपन्यास स्वरूप तत्व आदि मानदंडों के आधार पर समीक्षा की क्षमता का निर्माण हुआ।

कथेतर गद्य विधाएँ :–

- गद्य की प्रमुख विधाओं के स्वरूप का परिचय, विकास क्रम की जानकारी प्राप्त हुई।
- छात्रों में गद्य साहित्य के मूल्यांकन रचना और समीक्षा की क्षमता विकसित हुई।
- मध्यकालीन कवि व काव्य रचना से परिचित हुए।
- रचना के आस्वादन व समीक्षण की क्षमता का विकास हुआ।
- छात्रों में साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से भावात्मक विकास हुआ।

आधुनिक भारतीय साहित्य :–

- भारतीय साहित्य के अध्ययन से क्षेत्रियता का लोप होकर राष्ट्रीयता का बोध कराना।
- भारतीय साहित्य के विविध आयाम इसे आधुनिकता और विश्व दृष्टि से जोड़ते हैं।
- भारतीय साहित्य विविधता में एकता के दर्शन करना है।
- आधुनिक भारतीय साहित्य समाज में सांमजस्य स्थापित कराता है।

PRINCIPAL
Mahila Mahavidyalaya
Jhojhu Kalan (Ch. Dadri)

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी आलोचना :–

- हिन्दी साहित्य की आलोचना का विश्लेषणात्मक ज्ञान, विभिन्न आलोचकों और उनकी आलोचना का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त हुआ।
- हिन्दी आलोचना की एतिहासिकता से परिचित हुए।
- आलोचनात्मक बोध विकसित करना।
- रचना के विश्लेषण की रणनीतियों से परिचित कराना।
- आलोचना और समाज के सम्बन्धों की पड़ताल में सक्षम बनाना।
- प्रस्तुत पाठ्यक्रम आलोचनात्मक विवेक विकसित करने का लक्ष्य रखता है जिसके सहारे छात्र 'जनता की चित्तवृतियों के संचित प्रतिबिम्ब' साहित्य का विश्लेषण कर सकेंगें।

लोक साहित्य : सन्दर्भ एवं पाठ :–

- लोक साहित्य की विशेषताओं को स्पष्ट करना।
- छात्र लोक में पीढ़ियों से चली आ रही ज्ञान परम्परा का शास्त्रीय महत्व स्थापित कर सकेंगे।
- धीरे–धीरे लुप्त हो रहे लोक साहित्य के संकलन एवं संरक्षण की प्रविधियाँ समझ सकेंगें।
- इतिहास, समाज, साहित्य और संस्कृति के नवीन अध्ययनों हेतु लोक आधारित पाठ का महत्व समझ सकेंगे।
- लोक–साहित्य के संकलन, संरक्षण की चुनौतियों को रेखांकित कर सकेंगें।

साहित्य की समझ :–

- साहित्यिक रचनाओं के प्रमुख अंशों का विश्लेषण।
- साहित्यिक उत्पति, इतिहास और साहित्य संबंधी सिद्धान्तों का अध्ययन।
- साहित्य में विभिन्न शैलियों, तकनीकों और प्रयोगों का विश्लेषण।
- साहित्य में समाज, सांस्कृतिक और एतिहासिक परिपेक्ष्य का मूल्यांकन।
- विभिन्न लेखकों और कवियों की रचनाओं की विशेषताओं की समझ।
- विभिन्न कलाओं और परिप्रेक्ष्यों से साहित्य के संबंध में गहराई समझना।

हिन्दी की संस्कृति :–

- हिन्दी की संस्कृति के मूल तत्वों का अध्ययन यथा संस्थाएँ, पत्रिकाएँ, आन्दोलन, केन्द्र इत्यादि।
- हिन्दी भाषा के विकास और इतिहास का मूल्यांकन।
- हिन्दी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं यथा धार्मिकता, समाज और राजनीति का अध्ययन।
- हिन्दी संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में विद्वानों के योगदान की महत्ता का विश्लेषण।
- हिन्दी की संस्कृति के साथ संबंधित समस्याओं और समाधानों का अध्ययन।

जनसंचार माध्यम एवं हिन्दी :–

- जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का अध्ययन यथा पत्रिका, टेलिविजन, रेडियो, इंटरनेट, शोशल मीडिया इत्यादि।
- हिन्दी माध्यम के साधनों का उपयोग करके संवादात्मक कौशल का विकास।
- विभिन्न संचार विधियों का उपयोग करके हिन्दी में साहितय समाचार और अन्य सामग्रियों का विश्लेषण और समझ।
- हिन्दी भाषा में अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास जैसे कि लेखन, बोलचाल और विचार।

PRINCIPAL
Mahila Mahavidyalaya
Jhojhu Kalan (Ch. Dadri)

Scanned with OKEN Scanner

- हिन्दी माध्यम से समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और अन्य मीडिया स्त्रोतों का उपयोग करके समाज में प्रभाव डालने के तरीकों का अध्ययन।
- हिन्दी माध्यम में साहित्य, सांस्कृतिक आयाम और समाज में परिवर्तन के प्रमुख चरणों का अध्ययन।

समकालीन साहित्य चिंतन :–

- मार्क्सवादी, विखंडनवादी और अन्य समकालीन विचारधाराओं के अनुसार साहित्य के रूप, भावात्मकता और सामाजिक संदेश का विश्लेषण।
- समकालीन साहित्य चिंतन के माध्यम से समाज में आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न मार्गों का विश्लेषण।
- विभिन्न साहित्यिक प्रवृतियों के माध्यम से समाज में समानता, न्याय के लिए जागरूकता का प्रसार।
- समकालीन साहित्य चिंतन की मुख्य धाराओं का विवेचन।

अस्मितामूलक साहित्य चिंतन :–

- अस्मितामूलक साहित्य चिंतन की मुख्य धाराओं , सिद्धान्तों और विचारधाराओं की समझ।
- अस्मितामूलक साहित्य के माध्यम से सामाजिक न्याय, समानता और सामाजिक विचार के प्रसार के तरीकों का अध्ययन।
- आदिवासी विमर्श की परम्परा, प्रवृतियाँ, महत्व व वैचारिकी का अंतरंग अध्ययन।
- आदिवासी विमर्श, स्त्री लेखन, दलित लेखन, किसान लेखन की परम्परा से परिचित हो सकेंगे।

विशिष्ट रचनाकार : कबीरदास :–

- कबीरदास की जीवनी, साहित्यिक योगदान और सामाजिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन।
- कबीरदास की रचनाओं में उपयोग की गई भाषा छंद और रचनात्मक तकनीकों का विश्लेषण।
- कबीरदास के द्वारा प्रस्तुत विचारों और मूल्यों का विश्लेषण यथा कि धर्म, जाति, समाज और मनुष्यता।
- कबीरदास की रचनाओं में प्रतिबिम्बित सामाजिक, धार्मिक और नैतिक मुद्दों का विश्लेषण।
- कबीरदास के द्वारा प्रस्तुत किए गए तत्वज्ञान, भक्ति और जीवन के उपदेशों का अध्ययन।
- कबीरदास के साहित्य का समकालीन समाज और आधुनिक विचारधारा के साथ तुलना।
- कबीरदास के द्वारा उत्कृष्ट की गई भक्ति साहित्य की महता और प्रभाव का अध्ययन।

अनुवाद सिद्धान्त एवं प्रयोग :–

- अनुवाद की परिभाषा, प्रभाव व अनुवाद की प्रक्रिया का बोध।
- विभिन्न भाषाओं के अनुवाद सिद्धान्तों का विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन।
- छात्र अनुवादक की विभिन्न भूमिकाओं से अवगत होकर अपने रोजमर्रा की जिन्दगी में उसकी उपयोगिता को समझ सकेंगे।
- अनुवादक के प्रमुख गुणों से अवगत हो सफल अनुवाद की गुणवत्ता की जानकारी।
- अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की अपार सम्भवनाओं की जानकारी।
- अनुवाद सिद्धान्त और प्रयाग के माध्यम से विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक समृद्धियों के बीच संचार के लिए समर्थता और अनुभव का विकास।
- अनुवादक दुभाषिए प्रकाशक बनने का परिचय।

PRINCIPAL
Mahila Mahavidyalaya
Jhojhu Kalan (Ch. Dadri)

Scanned with OKEN Scanner

मूल्यांकन :–

इस प्रकार के पाठ्यक्रम से स्नातकोत्तर हिन्दी करने वाले छात्रों को हिन्दी भाषा व साहित्य के क्षेत्र में गहरी जानकारी और समझ प्राप्त होती है, जिससे उनके साहित्यिक कौशल व सोचने की क्षमता में सुधार होता है। विद्यार्थी हिन्दी साहित्यकारों की साहित्यिक रचनाओं का आस्वादन एवं मूल्यांकन करने में सक्षम हो प्राचीन एवं नवीन साहित्यिक विधाओं का विवेचन–विश्लेषण करके साहित्य सृजन की ओर प्रवृत होते हैं।

PRINCIPAL
Mahila Mahavidyalaya
Jhajhu Kalan (Ch. Dadri)

Scanned with OKEN Scanner